'भूषण का काव्य शिल्प'

गौरव वर्मा

सारांश

प्रत्येक कलाकार (कवि) अपनी बात को अपने ढंग से कहने के लिए स्वतंत्र है। तथा वह काव्य में अपने विषय को एक व्यवस्थित और विशिष्ट क्रम से विभिन्न उपादानों का आश्रय लेकर प्रस्तुत करता हैं। वस्तुतः अभिव्यक्ति के समक्ष होने पर ही अनुभूति सर्व–संवेदनीय बन पाती है।भूषण ने शिवाजी और छत्रसाल के शौर्य एवं पराक्रम के साथ–साथ तत्कालीन समाज की विषमावस्था का भी अत्यन्त भव्य चित्र आंकित किया है। और औरंगजेब के आत्याचारों एवं अनाचारों की झाँकी अंकित करते हुए, तत्कालीन धार्मिक एवं राजनीतिक स्थितियों का बड़ी सजीवता के साथ चित्रण किया भूषण के इन सभी वर्णनों में उनकी बहुमुखी प्रतिभा के दर्शन होते हैं।

मुख्य शब्द : अभिव्यक्ति, विषमावस्था, संवेदनीय, विशिष्टता, धार्मिक, अनुभूत, मार्मिकता

प्रस्तावना

कवि सामान्य व्यक्ति से विशिष्ट होता है ब्राहा जगत से प्राप्त अनुभूत सत्यों और अनुभवों को सामूहिक चेतना का विषय बनाकर प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने की उसकी अद्वितीय कला ही उसे विशिष्टता प्रदान करती है जिस कवि में जितनी अधिक मार्मिकता होगी। वह उतनी ही सक्षमता एवं सहजता से अपनी अनुभूति को सहज संप्रेषणीय बनाने में सफल होगा। काव्य में भाव–पक्ष और शिल्प पक्ष की समन्वयात्मक परिणति हैं। दोनों का काव्य में समान महत्व है। प्रत्येक कलाकार (कवि) अपनी बात को अपने ढंग से कहने के लिए स्वतंत्र है। तथा वह काव्य में अपने विषय को एक व्यवस्थित और विशिष्ट क्रम से विभिन्न उपादानों का आश्रय लेकर प्रस्तुत करता हैं। वस्तुतः अभिव्यक्ति के समक्ष होने पर ही अनुभूति सर्व–संवेदनीय बन पाती है।

काव्य–शिल्पः स्वरूप तथा तत्व

शिल्प का अर्थ–' 'भरत' ने नाट्यशास्त्र में शब्द 'शिल्प' और 'कला' का प्रयोग पृथक अर्थो में किया है। जो संस्कृत साहित्य में संभवत सर्वप्रथम है उन्होंने यद्यपि इन दोनों का अन्तर स्पष्ट नहीं किया, तथापि अभिगुप्त ने 'नाट्यशास्त्र' की व्याख्या 'अभिनवभारती' के अन्तर्गत इन दोनों की व्याख्या की है 'शिल्प' से माला, चित्र, खिलौने आदि की रचना का ग्रहण होता है कला से गीत वाद्यादि का'[1]

'पाश्चात्य विद्वान 'शिल्प' और 'कला'– दोनों में ही प्रतिभा, सूक्ष्मता और किसी–न–किसी रूप में कौशल के समावेश को स्वीकार करते हैं। अन्तर इनमें वे इतना ही मानते हैं कि जहाँ शिल्प में एक ओर रचयिता का प्रविधिगत अधिकार व्यक्त होता है और दूसरी और द्रष्टा रचना से जिन प्रभावों को ग्रहण करता है उनका वह विश्लेषण और अनुकरण कर सकता है। वहाँ 'कला' की स्थिति में एक और कलाकार की वैयक्तिक भावना की अभिव्यक्ति का प्राधान्य

[1] रीतिकालीन रीतिकवियों का काव्य–शिल्प–डॉ. महेन्द्र कुमार, पृष्ठ 3

रहता हैं। तथा दूसरी और द्रष्टा द्वारा गृहीत रचना–विषयक प्रभाव के विश्लेषण और अनुकरण की संभवना नहीं रहती है।'[2]

यहाँ पर 'शिल्प' शब्द को रचना–कौशल के द्योतक ऐसे ही व्यापक अर्थ में ग्रहण कर रहे हैं जो एक और रचयिता की वैयक्तिक भावना अथवा दृष्टि तथा रचना–व्यापार अथवा प्रविधि पर उसके अधिकार का और दूसरी और उसकी रचना के प्रभाव के विश्लेषणात्मक होने का संकेत करता है।

'काव्य–शिल्प के भी तीन आधार भूत तत्व–बिम्ब, माध्यम और स्वरूप स्वीकार किये जा सकते हैं।'[3]

जिस प्रकार चित्रकार कल्पना के आश्रय से अपने मन में बिम्ब का निर्माणकर उसकी अभिव्यक्ति करता है ठीक उसी प्रकार कवि की अपनी कल्पना को चाहे वह कारयित्री हो अथवा पुनरूत्पादक– रचना बद्ध कर देता है।

बिम्ब की अभिव्यक्ति का माध्यम काव्य के अन्तर्गत भाषा होता है काव्य में वाणी की वक्रता तथा शब्द की शक्तियाँ इस कार्य का सम्पादन करती हैं। कवि अपनी रचना के अन्तर्गत कतिपय अंलकारों के उचित प्रयोग द्वारा सम्पन्न करता है। अतएव कह सकते हैं कि काव्य की अभिव्यक्ति का माध्यम–भाषा–अपने भीतर पद (शब्द) योजना अर्थात् शब्दों और उनके व्याकरण–संबंधी प्रयागों, अलंकारों तथा शब्दार्थ–सौष्ठव आदि आते हैं।

इसी प्रकार जहाँ तक स्वरूप का प्रश्न है उसका अध्ययन अभिव्यक्ति की गठन और उसके आकार को दृष्टि में रखकर किया जाना चाहिए काव्य के अंतर्गत अभिव्यक्ति का गठन का परिचायक वर्ण–चयन अथवा छन्द योजना और आकार का रचना–विधान अथवा काव्य विधा हुआ करती है।

अतः कहा जा सकता है कि काव्य–शिल्प के बिम्ब और माध्यम– अर्थात भाषा के अतिरिक्त छन्द योजना तथा रचना–विधान आदि आधार भूत तत्व है इन्हीं के आधार पर किसी भी रचना के शिल्प की परीक्षा की जा सकती है।

"रीतिकाल में निर्दिष्ट काव्य–रीति या प्रणाली में कविता करना साहित्य की प्रधान प्रवृत्ति हो गई थी। इस काल में 'रीति' 'कवित्त रीति' और 'सुकवि रीति' शब्दों का प्रचलन हो गया था। लगता है रामचन्द्र शुक्ल ने इन्हीं प्रयोगों को ध्यान में रखते हुए इस काल को 'रीतिकाल' कहा है।'[4]

रीतिकालीन काव्य में तीन धारा हैं–

1. **रीतिबद्ध–** इस धारा के कवियों ने अलंकार नायिका–भेद, आदि के लक्षण बताकर उनके उदाहरण स्वरूप काव्य रचे– जैसे केशव, भूषण, मतिराम, पद्याकर।

2. **रीतिसिद्ध धारा–** इस धारा के कवि लक्षण–उदाहरण की पद्धति तो नहीं अपनाते, किंतु रचना करते समय लक्षणों का ध्यान अवश्य रखते हैं– बिहारी।

3. **रीतिमुक्त धारा–** इस धारा के कवि लक्षण–उदाहरण की न तो पद्धति अपनाते हैं न ही लक्षणों का ध्यान रखते हैं ये प्रेम के विशेषतः बिरह के उन्मुक्त गायक कवि हैं। घनानंद, आलम, बोधा ठाकुर आदि।

---

[2] रीतिकालीन रीतिकवियों का काव्य शिल्प–डॉ. महेन्द्र कुमार– पृष्ठ 5
[3] रीतिकालीन रीतिकवियों का काव्य शिल्प–डॉ. महेन्द्र कुमार
[4] हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास–डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ 54

' 'हिन्दी के रीतिकवियों काव्य–कला की दृष्टि से उत्कृष्ट कोटि के है। इनमें से कुछ ऐसे भी है जिन्होंने अचार्यत्व–प्रदर्शन की दृष्टि से कलात्मक चमत्कारों का सहारा ज्यादा लिया है, पर अधिकतर कवि शुद्ध कविता में ही प्रवृत्त रहे हैं। उन्होंने काव्य के विभिन्न उपादानों का उपयोग किया है। फलतः उनका काव्य भाव और भाषा, दोनों दृष्टियों से उच्चकोटि का सिद्ध हुआ है।'[5]

' 'भूषण–बीर रस के प्रसिद्ध कवि चिंतामणि और मतिराम के भाई थे इनका जन्मकाल संवत् 1670 हैं चित्रकूट के सोलंकी राजा रूद्र ने इन्हें कवि 'भूषण' की उपाधि दी थी। तभी से ये भूषण के नाम से प्रसिद्ध हो गयें।'[6]

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी अपने इतिहास में भूषण की उक्त छः रचनाओं का निर्देश दिया हैं परन्तु अभी तक की खोज़ों के आधार पर भूषण की केवल तीन रचनाएँ ही प्राप्त हुई है। 1. शिवराज्य भूषण 2. शिवाबावनी 3. छत्रसाल दशक इनके अतिरिक्त 'भूषण हजारा' 'भूषण उल्लास', और दूषण–उल्लास का अभी तक कही कोई पता नहीं चला हैं।'[7]

1. **शिवराज भूषण–** शैली की दृष्टि से अलंकार–लक्षणग्रंथ है जिसमें विभिन्न अंलकारों के लक्षण दोहों में तथा उनके उदाहरण छप्पय, कवित्त, सवैया आदि छन्दों में दिये गये हैं।

वर्ण्य विषयः– 'रीतिकालीन लक्षणग्रंथों में शिवराज भूषण में 100 शब्दालंकार और 5 अर्थालंकारों का वर्णन है। शिव चरित्र, शिव कालीन इतिहास और शिवाजी से सम्बद्ध अनेकानेक प्रसंगों का प्रमाणिक इतिवृत संचित है।'[8]

2. **शिवाबावनी–** शिवा बावनी के 52 छन्दों की युद्ध, दान, दया और धर्म वीरता की प्रशंसा औरंगजेब और शिवाजी की तुलना तथा उसमें भी शिवाजी की श्रेष्ठता प्रतिपादित है। इस संकलन–ग्रंथ में शिवाजी के शौर्य, औदार्य, आतंक, साहस और वैभव का बड़ा ओजस्वी वर्णन हैं।

3. **छत्रसाल दशक–** छत्रसाल बुन्देला की प्रंशसा में भूषण द्वारा रचित 10 छंदों के संकलन का नाम छत्रसाल दशक है। छत्रसाल बुंदेला के शौर्य औदार्य, आतंक, और उसके जीवन से सम्बधित ऐतिहासिक घटना प्रसंगों का बड़ा सजीव वर्णन पाया जाता है।

भूषण के काव्य का मूल स्वर

'भूषण का काव्य वैयक्तिक है उसका यह कहना है कि सामान्य कथन के रूप में नहीं है काव्य में आवेग है। यह आवेग सहज है और सुविधा के लिए हम इस आवेग का विवेचन तीन स्तरों पर अलग–अलग रूप में विश्लेषित कर सकते हैं। वे इस प्रकार हैं। 1. औरंगजेब के प्रति 2. छत्रपति शिवाजी के प्रति 3. इतिहास बोध के प्रति यद्यपि काव्य के समग्र प्रभाव को देखे तो ये तीनों ही स्तर एक–दूसरे से मिलते प्रतीत होंगे। इन तीनों को मिला कर देखने से भूषण के काव्य का मूल स्वर स्पष्ट हो जाता है हम कवि के आशय को पहचान सकते हैं।'[9]

[5] रीतिकाव्य मूल्यांकन के नये आयाम– सम्पादक–डॉ. प्रभाकर सिंह, पृष्ठ 116
[6] हिन्दी साहित्य का इतिहास– रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 209
[7] हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि– डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृष्ठ 338
[8] संक्षिप्त भूषण– डॉ. भगवानदास तिवारी, पृष्ठ 25
[9] भूषण और उनका साहित्य– डॉ. राजमल बोरा, पृष्ठ 245

1. **भूषण की भाषा–** कवि के हृदयस्थ भावों की अभिव्यक्ति का सबसे प्रमुख साधन भाषा है।

'भूषण की काव्य भाषा का आधार सामान्यतः ब्रजभाषा है पर मुसलमानी दरबार का वातावरण देने के लिए कही–कही खड़ी बोली भी प्रयुक्त हुई है।'[10]

भूषण की भाषा नीति उदार थी वे शब्दों की जाँति–पाँति की अपेक्षा उसकी भाव गरिमा अर्थवता और अर्थ–छटा के जौहरी थे।

ता दिन अखिल खलभलै खल खलक में जा दिन शिवाजी गाजी नेक करखत है।''[11]

उक्त पंक्ति में अखिल, ढाल संस्कृति के, 'खलक' अरबी का खलभलै शुद्ध देशज है।

शब्द भण्डार– भाषा के विषयानुरूप बनाने में महाकवि भूषण का शब्द भंण्डार अत्यंत व्यापक है।

तत्सम शब्द– रीतिकालीन संस्कृत की पृष्ठभूमि पर ही फला–फूला है भूषण ने भी संस्कृत–काव्य शास्त्र का गहन अध्ययन किया था। भूषण ने भावानुकूल और संदर्भानुकूल तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है।

'सक्र जिमि सैल पर अर्क तमफैल पर
विघन की रेल पर लंबोदर लेखिए।
राम दसकंध पर भीम जरासंध पर
'भूषण' ज्यों सिंधु पर कुंभज बिसेखिये।
हर ज्यों अंग पर, गरूण भुजंग पर
कौरव के अंग पर पारथ ज्यों पेखिऐ।'[12]

वहाँ अंक, तम, लंबोदर, राम, भीम, सिंधु कुंभज, अनंग,

आदि तत्सम शब्द का प्रयोग हुआ है।

तदभव् शब्द– भूषण ने सम्पूर्ण राष्ट्र में जागृति और राष्ट्र की सोई हुई भावनाओं को उद्बुद्ध करना चाहते थे इसके लिए उन्होंने अपनी भाषा को ओजपूर्ण तो बना रखा ही सरलता और सुगमता भी प्रदान की।

'जिन फन फुतकार उड़त पहार भार कूरभ कठिन जनु कमल विदलिगौ।'[13]

यहाँ पर फुतकार, पहार, आदि है।

विदेशी शब्द– इनके काव्य में जहाँ कहीं भी मुसलमानों का वर्णन है वहाँ भाषा में उर्दू, अरबी, फारसी और तुर्की के शब्दों का अनायास प्रयोग द्रष्टव्य है।

[10] मध्यकालीन हिन्दी काव्यभाषा– राम स्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ 138
[11] संक्षिप्त भूषण– डॉ. भगवानदास तिवारी, पृष्ठ 63
[12] भूषण ग्रंथावली–आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र– पृष्ठ 206
[13] भूषण की बिम्ब योजन– डॉ. अर्चना शर्मा, पृष्ठ 71

'तुरमती तहखानै तीतर गुसलखाने, सूकर सिलहबाने कूकत करीस हैं।'[14]

देशज– बुंदेली भाषा (भविष्यत् रूप)–

'भूषन भूधर उद्धरिबौ सुनै और जिते गुन ते सिवजी के'[15]

अवधी की उकार पद्धति भी मिलती है।

'दरिद्र को मारि तेरे द्वार आइयतु है'[16]

मुहावरें और लोकोक्ति– भूषण के काव्य में ऐसे कई मुहावरे और लोकोक्ति विद्यमान है।

1. मुहावरे– **'मोडि राखे मुगल मरोडि राखे पातसाइ, बैरी पीसि राखे'**[17]

लोकोक्तियाँ– 1. सौ–सौ चहू खाइ के बिलाइ बैठी तप के।

भाषागत बैशिष्ट्य– भूषण की भाषा ब्रजभाषा है पर हम उसे ब्रज प्रदेश की क्षेत्रीयता के संकुचित दायरे में आबद्ध ब्रजभाषा नहीं कह सकते वह रीतिकाल की परिष्कृत परिनिष्ठित, प्रभाव शालिनी, साहित्यिक ब्रजभाषा है। जिसमें संस्कृत की तत्सम शब्दावली के अतिरिक्त भूषण ने अरबी–फारसी शब्द आदि का प्रयोग किया हैं।

'भूषण की भाषा के गुणों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि भूषण की भाषा में वीर रसानुकूलता प्राप्त करने के लिए जैसे ही अपने को वीर–वेश–भूषा से सुसज्जित किया हैं वैसे उसमें ओजस्विता के साथ–साथ अनेक गुण अनायास ही आ गए इन गुणों को सुविधा की दृष्टि से सात भागों में विभक्त कर सकते हैं। 1. ओजस्विता 2. नादात्मकता 3. संयुक्ताक्षरता 4. युगानुकूलता 5. रसानुकूलता 6. लाक्षणिकता 7. संशिल्ष्टता आदि।'[18]

भूषण के भाषा के दोष– भूषण की भाषा में जहाँ इतने गुण है वहाँ उसमें दोष भी है। खुब शब्दों को तोड़ा मरोड़ा है अच्छी तरह से उसे विकृत किया है अतः भूषण की भाषा के दोष निम्न है।

1. शब्द निर्माण की निरंकुशता– भूषण परिस्थिति कथन एवं आवश्यकता के अनुसार– स्वतन्त्र ढंग से शब्दों को ढाला करते हैं इसलिए कुछ शब्द तो ऐसे विचित्र बन गये हैं कि उनके स्वरूप को जानना भी असम्भव है।

जैसे– दृष्ट– 'हिरट'

गरिष्ट– को 'गरट्ट'

2. अर्थ–क्लिष्टता– भूषण ने मनमाने ढंग से जिन शब्दों का निर्माण किया है वे क्लिष्ट हैं।

1. खेदि–खेदि – खदेड़–खदेड़कर

---

14 भूषण की बिम्ब योजना– डॉ. अर्चना सिंह– पृष्ठ 71
15 भूषण की बिम्ब योजना– डॉ. अर्चना सिंह– पृष्ठ 72
16 भूषण की बिम्बयोजना–डॉ. अर्चना सिंह– पृष्ठ 72
17 भूषण ग्रंथावली– आचार्य विश्वनाथ मिश्र, पृष्ठ 209
18 हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि– डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृष्ठ 351

2. तम–अंस – अंधकार का समूह

भूषण के काव्य में अलंकार– भूषण ने अलंकारों का प्रयोग मुख्यता अपने भावों भंगिमा के लिए किया है भूषण ने सामान्य–विशेष तथा भाविक–छवि नायक को नये अलंकार भी माने है। भूषण ने यमक अलंकार का वर्णन जो चमत्कार से भरा हुआ है।

'ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी
ऊँच घोर मंदर के अन्दर रहाती है।
कंद–मूल भोग करे कंद–मूल भोग करे
तीन बरे खाती है सो तीन बेर खाती है।[19]

भूषण ने उपमा, मालोपमा रूपक, आदि अंलकारों का वर्णन किया है।

भूषण का काव्य गुण– काव्य के तीन प्रमुख गुण मानते जाते हैं जो माधुर्य, ओज, और प्रसाद कहलाते हैं। भूषण ने मुख्यतया बीर रस का निरूपण किया है। अतः इनकी कविता ओज–गुण से सपन्न है। जिसके रसास्वादन से चित्त दीप्त हो उठता है। और हृदय में आवेग उत्पन्न हो जाता है।

सजि चतुरंग सैन अंग मैं उमंग धारि
सरजा सिवाजी जग जीतन चलत है
भूषन भनत नाद–बिहद नगारन के
नदीनद मद गैवरन के रलत है'[20]

भूषण के काव्य में रीति एवं वृत– काव्य–रचना के लिए वैदर्भी, गौडी, पांचाली नामक तीन रीतियाँ तथा उपनागरिका, पुरुषा और कोमल नायक तीन वृत्तियाँ प्रचलित है भूषण ने मुख्यतया बीर एवं रौद्र रस का ही निरूपण किया है अतः उनकी काव्य–रचना में गौडी रीति एवं पुरूषा वृत्ति की प्रधानता है। और उसमें ओज–प्रकाशक पुरूष वर्णो की बहुलता है।

'क्रुद्ध फिरत अति जुद्ध जुरत नहिं रूद्ध मुरत भट
खग्ग बजत अरि बग्ग तजत सिर पग्ग सजत चट।'[21]

भूषण के काव्य में शैली– भूषण ने अपनी काव्याभिव्यक्ति के लिए विविध काव्य–शैलियों का प्रयोग किया हैं। भूषण की इस विवेचनात्मक शैली में उनकी कला–निपुणता एवं ज्ञान–गरिमा का स्पष्ट पता चला जाता है। जैसे–

'जोर रूसियान को है, तेग खुरासानहू की
नीति इग्लैंड, चीन हुन्नर महादरी,
हिम्मत अयान मरदान हिन्दवानह की,

[19] हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि– डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृष्ठ 346
[20] भूषण ग्रंथावली– आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृष्ठ 207
[21] हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि– डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृष्ठ 347

रूस अभिमान, हबसान–हद कादेरी।'[22]

भूषण के काव्य में छंद– भूषण ने 'शिवराज–भूषण' में मनहरण कवित्त के अतिरिक्त दोहा, हरिगीतिका सवैया आदि छन्दों का वर्णन किया। 'शिवा–बावनी में मनहरण कवित्त और छप्पय छन्द का प्रयोग हुआ है जिनमें से वहाँ मनहरण कवित्त का ही प्राधान्य है। छत्रसाल–दशक में भी मनहरण कवित्तों और एक छप्पय छन्द का प्रयोग हुआ है।

1. **दोहा–** इसमें पहले और तीसरे चरण में 13–13 मात्राएँ होती है और दूसरे तथा चौथे में 11–11 मात्राएँ होती है।

'दसरथजु के राम थे (13)

वसुदेव के गोपाल (11)

सोई प्रगटे साहि के (13)

श्री शिवराज भुवाल (11)'[23]

इस प्रकार भूषण ने बड़ी सफाई के साथ शास्त्रोक्त विधि से छन्दों का प्रयोग किया है।

''शिवराज–भूषण के शब्दालंकारों के उदाहरण में आये हुए अमृत–ध्वनि छन्द अंपभ्रश और प्राकृतिक शब्दों के प्रयोग के कारण ये छन्द कुछ मुश्किल से हो गये है अमृत ध्वनि छंद प्रायः युद्ध वर्णन के लिए ही प्रयुक्त होता है।'[24]

भूषण के काव्य में रस निरूपण– भूषण ने मुख्य रूप से बीर–रस का निरूपण किया है। उनका सारा काव्य बीर–रस के स्थायी भाव उत्साह का निरूपण करने के लिए है। भूषण ने वीर–रस के युद्धवीर, धर्मवीर, दानवीर एवं दयावीर चारों भेदों का बड़ी सफलता के साथ चित्रण किया है।

'भूषण के काव्य में एक ओर अलंकारों का प्रयत्नपूर्वक नियोजन है दूसरी और वीर रस की व्यंजना के लिए द्वित्व व्यंजन मूर्द्धन्य ध्वनियों और सयुक्त ध्वनियों को खोलकर प्रयुक्त करने की प्रवृत्ति व्यापक रूप से मिलती है।'[25]

1. **युद्धवीर–** युद्धवीरता के सन्दर्भ में भूषण ने सैनिकों की साज–सज्जा, सैन्य– प्रस्थान, युद्धक्षेत्र की मारकाट आदि का जो वर्णन किया हैं। उसमें वीर रस की बड़ी सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।

'छूटत कमान बान बन्दूकऽरू काकबान,
मुसकिल होत मुरचानहूँ ही ओट में।
ताही समै शिवराज हुकुम कै हल्ला कियौ
दावा बाँधि द्वोषिन पै वीरन ले जोट में'[26]

[22] हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि– डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृष्ठ 348
[23] हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि– डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृष्ठ 349
[24] भूषण ग्रथावली– सं. राजनरायण शर्मा, पृष्ठ 75
[25] हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास– रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ 67
[26] संक्षिप्त भूषण– डॉ. भगवानदास तिवारी, पृष्ठ 75

दानवीर– रीतिकालीन काव्य–परम्परा के अनुसार भूषण ने भी शिवाजी और छत्रशाल की दानवीरता का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन किया है।

'सहज सलील सील जलद से नील डील
पब्बय से पील देत नाहिं अकुलात हैं
भूषन भनत महाराज सिवराज देत,
कंचन को ढेरू जो सुमेरू सो दिखात है।'[27]

दयावीर– भूषण ने दयावीरता का वर्णन धार्मिक भावनानुरूप जीव–दया के रूप में नहीं, अपितु युद्धवीरों के पुरुषार्थ को प्रकट करने वाले औदार्य के रूप में किया है–

'दो हा के कहे तें अरि लोग ज्वाइयतु है'[28]

धर्मवीर– उन्होंने औरंगजेब की धर्मान्धता और हिन्दू धर्म विनाशिनी नीति के विरुद्ध तलवार उठा हिन्दू धर्म का संरक्षण किया था, अतः उनकी धर्म वीरता का बखान करते हुए भूषण कहते है कि–

'बेद राखे विदित पुरान परसिद्ध राखे'
राम नाम राख्यौ अति रसना सुघर में
हिन्दुन की चोटी राखी है सिपाहिन की
कांधे में जनेऊ राख्यों माला राखी गर में'[29]

'भूषण श्रृंगार के व्यापक प्रभाव को अतिक्रम कराके अपनी कविता को वीररस की गंगा में स्नान करा सके। यद्यपि उस वीर काव्य में परम्परागत रूढ़ियों का और चारण कवियों की उस प्रथा का प्रभाव पूर्ण रूप से पालन किया गया है। जिसमें ध्वनि को अर्थ से अधिक महत्व दिया जाता है और उसकी प्रभावोत्पादकता उत्पन्न करने के लिए शब्दों को तोड़ा–मरोड़ा जाता है, फिर भी भूषण की कविता में प्राण है।'[30]

'इनकी कविता वीर–रस प्रधान है, परन्तु इसी नाते इसके अंगीभूत बीभत्स, भयानक और रौद्र रसों का भी यथास्थल सुन्दर प्रवेश हो गया है।'[31]

'मुख्यतः भयानक रस के जिस (रस) के वर्णन में भूषण महाराज बड़े पटु हैं इन्होंने शिवाजी के दल का वर्णन इतना नहीं किया है जितना कि शत्रुओं पर उसकी धाक का इसी हेतु इनके ग्रंथ में भयानक रस का बहुत अधिक समावेश है।'[32]

भूषण के काव्य में बिम्ब– भूषण के बीररस–प्रधान–काव्य में नाद–बिम्बों और रूप–बिंबों की प्रमुखता मिलती है। आश्रयदाता राजाओं के गुण, राजवैभव, युद्ध सैन्य, प्रमाण, और सज्जा, युद्धोपरांत वर्णन एवं शत्रु पक्ष पर राजाओं के

---

27 संक्षिप्त भूषण– डॉ. भगवानदास तिवारी, पृष्ठ 75
28 संक्षिप्त भूषण– डॉ. भगवानदास तिवारी, पृष्ठ 75
29 भूषण ग्रंथावली आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृष्ठ 209
30 हिन्दी साहित्यः उद्‌भव और विकास– हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 168
31 भूषण भारती– श्री हरदयालु सिंह, पृष्ठ 78
32 भूषण ग्रंथावली, पं. शुक देव बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र, पृष्ठ 38

आतंक के सजीव चित्रण में इन बिंबों के लक्षित और उपलक्षित दृष्टि में स्वच्छ, आकर्षक एवं प्रभावी रूप देखने को मिलते हैं।

महाराजा शिवा जी के भय और उनके आने की आशंका मात्र से शत्रु–पक्ष में कैसी भाग–दौड़ शुरू होती है– इसका सजीव एवं सफल गतिपरक बिम्बांकन कवि कवि भूषण ने निम्न छंद में किया।

'साहित नै सरजा के भय सों भागने भूप,
मेरू मैं लुकाने ते लहत जाय ओत है
भूषण तहाऊँ मरहटपति के प्रताप
पावत न कल अति कौतुक उदोत हैं।
सिव आयो सिव आयो संकर के आगमन
सुनि के परान ज्यों लागत अरि गोत हैं'[33]

शिवा जी के भय और आंतक से शुत्र–राजाओं का भाग–भागकर इधर–उधर छिपना बिंब की गत्यात्मकता और सक्रियता प्रदान कर रहा है।

भूषण के काव्य में शब्द शक्ति– शब्द–शक्ति तीन प्रकार की होती है अभिधा, लक्षणा, व्यंजना–शब्द की तीनों शक्तियों का सफल प्रयोग किया है–

काहू के कहे सुने ते जाही और चाहें ताही,
और इकटक थरी चारिक चहत हैं।
कह ते कहत बात कहे तें पियत खात,
भूषन भनत ऊँची साँसन जहत हैं।
पौढे हैं तो पौढे बैठे बैठे खरे खरे हय
को है कहा करत यों ज्ञान न गहत हैं
साहि के सपूत सिव साहि तब बैरि हम
साहि सब रातौ दिन सोचत रहत है।[34]

इस छंद में भूषण ने शिवा जी के आंतक और शत्रुओं की दीनता को व्यंजित करने के लिए अभिधा प्रधान शब्दावली का प्रयोग किया है भूषण ने वाचक शब्दों का प्रयोग किया है भूषण जितनी कुशलता से किया है, उनी ही पटुता उन्होंने लाक्षणिक और व्यंजक शब्दों के प्रयोग में भी दिखाई है।

---

[33] भूषण की बिम्ब योजना– डॉ. अर्चना शर्मा, पृष्ठ 52
[34] भूषण की बिंब योजना– डॉ. अर्चना शर्मा– पृष्ठ 77

इससे हम भूषण के भाषा के अधिकार का सरलता का अनुमान कर सकते हैं और कह सकते हैं कि बीररस के अनुकूल भाषा के संचयन में इस महाकवि को बहुत अच्छी सफलता मिली थी।[35]

भूषण के काव्य में व्याकरण– भाषा की कसौटी व्याकरण है भाषा का स्वरूप– निर्धारण व्याकरण प्रत्यय, विभक्तियाँ, क्रियापद आदि। भूषण की भाषा व्याकरण की दृष्टि से पर्याप्त स्वच्छ और स्पष्ट है। उनका वाक्य–विन्यास इतना सरल है कि अर्थ तक पहुँचने में किसी तरह का कोई व्यतिक्रम नहीं होता, अपितु प्रत्येक पंक्ति का अर्थ साथ–साथ स्पष्ट होता चलता है–

'इंद्र जिमि जम्भ पर, बाड़व सुअंभ पर
रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन वारिवाह पर, संभु रतिनाह पर
ज्यों सहस्त्रवाहु पर राम–द्विजराज है
दावा द्रुम दंड पर चीता मृग–झुंड पर
भूषण बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर
त्यों मलिच्छ वंस पर सेर शिवराज है।'[36]

काव्यगत अपेक्षाओं को छोड़कर इस छंद की पदावली स्वच्छ और वाक्य विन्यास गतिमय है। बिना किसी परिवर्तन के इसका गद्य में रूपान्तर किया जा सकता है।

भूषण का प्रशस्तिपरक काव्य की रचना करने के कारण शृंगारिक कवियों के समान इन्हें कल्पना की ऊँची उड़ान भरने का अवकाश न मिल सकने के कारण इनकी रचनाओं में एकदम नये बिम्बों का यद्यपि किसी सीमा तक अभाव रहा है। तथापि विषय के अनुरूप जिस ओजपूर्ण वाणी की अपेक्षा होती है। वह इनमें सर्वत्र दृष्टिगत होती है। इनके निर्वाह के लिए संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फारसी तथा ब्रजभाषा और क्षेत्रीय बोलियों के ओजपूर्ण शब्दों की योजना ही इन्होंने नहीं की, यथावश्यकता शब्दावली को तोड़–मरोड़कर विकृत करने में इन्होंने संकोच नहीं किया।'[37]

निष्कर्ष

सारांश यह है कि भूषण ने शिवाजी और छत्रसाल के शौर्य एवं पराक्रम के साथ–साथ तत्कालीन समाज की विषमावस्था का भी अत्यन्त भव्य चित्र आंकित किया है। और औरंगजेब के आत्याचारों एवं अनाचारों की झाँकी अंकित करते हुए, तत्कालीन धार्मिक एवं राजनीतिक स्थितियों का बड़ी सजीवता के साथ चित्रण किया भूषण के इन सभी वर्णनों में उनकी बहुमुखी प्रतिभा के दर्शन होते हैं। क्योंकि उन्होंने अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण देकर जहाँ रीतिकालीन पद्धति का निर्वाह किया है वहाँ अपने यशस्वी बीर नायकों के सुयश का वर्णन करके अपनी सच्ची देश उत्कृष्ट स्वदेशानुराण को भी प्रकट किया है। भूषण के जिस आर्दश को अपनाकर कवि–कर्म आरम्भ किया था उसी के अनुरूप विविध अलंकार गुण रीति, वृत्ति आदि से सुसज्जित करके वीर–भावाभिव्यक्ति के सर्वथा अनुकूल ढालने का

[35] महाकवि भूषण– भगीरथ प्रसाद दीक्षित, पृष्ठ 117
[36] भूषण की बिम्ब योजना– डॉ. अर्चना शर्मा, पृष्ठ 75
[37] हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ 351

प्रयास किया है। वीर रस की अभिव्यंजना के अनुकूल ढालने में भूषण को अनेक शब्दों को मनमाने ढंग से तोड़ना–मरोड़ना भी पड़ा है, परन्तु इससे भाषा की अभिव्यंजना–शक्ति की वृद्धि ही हुई है और वह सहृदयों के, हृदयों में वीर–भावों को जगाने में सर्वथा समर्थ एवं सशक्त बनी है। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि भूषण वीर रस के रस–सिद्ध कवि है, ये वीर–काव्य के यशस्वी प्रेणता है और बीर रस के कवियों में भूषण है।

आधार ग्रन्थ

1. भूषण ग्रंथावली– आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1998

सन्दर्भ ग्रथ सूची–

1. रीतिकालीन रीतिकवियों का काव्य शिल्प– डॉ. महेन्द्र कुमार– आर्य बुक डिपो प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–1997
2. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास– डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी– ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2010
3. रीतिकाव्य मूल्यांकन के नये आयाम– सम्पादक, डॉ. प्रभाकर सिंह– लोक भारती प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2016
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कौशल पब्लिशिंग हाउस फैजाबाद, प्रथम संस्करण–2011
5. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि– डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना– अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा द्वितीय संस्करण–2009
6. संक्षिप्त भूषण– डॉ. भगवान दास तिवारी, साहित्य भवन, प्राइवेट लिमिटेड प्रकाशन इलाहाबाद– द्वितीय संस्करण–1980
7. भूषण और उनका साहित्य– डॉ. राजमल बोरा, साहित्य रत्नालय प्रकाशन कानपुर, संस्करण द्वितीय– 1987
8. मध्यकालीन हिंदी काव्यभाषा– रामस्वरूप चतुर्वेदी– लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1974
9. भूषण की बिम्ब योजना– डॉ. अर्चना शर्मा, गौरव बुक्स प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2012
10. भूषण ग्रंथावली–सम्पादक राजनरायण शर्मा– हिन्दी भवन प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–1950
11. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास– राम स्वरूप चतुर्वेदी– लोक भारती प्रकाशन– इलाहाबाद– संस्करण पुनः मुर्द्रण– 2016
12. हिन्दी साहित्यः उद्‌भव और विकास– हजारी प्रसाद द्विवेदी– राजकमल प्रकाशन– इक्कीसवाँ संस्करण–2017
13. भूषण भारती– श्री हरदयालु सिंह इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग प्रकाशन– प्रथम संस्करण
14. भूषण ग्रंथावली– पं. श्याम बिहारी, मिश्र और पं. शुकदेव बिहारी मिश्र– नागरीप्रचारिणी सभा काशी, सप्त संस्करण–सवंत 2015

15. महाकवि भूषण– भगीरथ प्रसाद दीक्षित– साहित्य भवन लिमिटेड प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1953 ई.

16. हिन्दी साहित्य का इतिहास– सम्पादक डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस–प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण–1985